दशम माला, खंड 46, अंक 12

मंगलवार, 12 दिसम्बर, 1995
21 अग्रहायण, 1917 (शक)

लोक सभा वाद-विवाद

का

हिन्दी संस्करण

पंद्रहवां सत्र

(दसवीं लोक सभा)

PARLIAMENT LIBRARY
No. 55
Date 16.7.96

सत्यमेव जयते

(खण्ड 46 में अंक 11 से 20 तक हैं)

लोक सभा सचिवालय
नई दिल्ली

मूल्यः पचास रूपये

(अंग्रेजी संस्करण में सम्मिलित मूल अंग्रेजी कार्यवाही और हिन्दी संस्करण में सम्मिलित मूल हिन्दी कार्यवाही ही प्रामाणिक मानी जायेगी। उनका अनुवाद प्रामाणिक नहीं माना जायेगा।)

विषय-सूची

दशम माला, खंड 46, पन्द्रहवां सत्र, 1995/1917 (शक)
अंक 12, मंगलवार, 12 दिसम्बर, 1995/21 अग्रहायण, 1917 (शक)

(*भाग —I प्रकाशित नहीं हुआ)

विषय	कालम
विविध	1—2

* इस तिथि के लिए निर्धारित तारांकित और अतारांकित प्रश्न 13.12.95 के वाद-विवाद में सम्मिलित किए गए हैं।

लोक सभा

मंगलवार, 12 दिसम्बर, 1995/21 अग्रहायण, 1917 (शक)

लोक सभा 11 बजे म.पू. पर समवेत हुई।

(अध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए)

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (लखनऊ) : अभी-अभी हम लोग केन्द्रीय कक्ष से आदरणीय चन्द्र शेखर जी के सम्मान समारोह से भाग लेकर लौटे हैं। उस अवसर पर इस बात पर बल दिया गया था कि संसद की मर्यादा, सदन की गरिमा को पुनर्स्थापित करने का प्रयास होना चाहिए, महोदय, आपने भी हमेशा इस बात पर बल दिया है। जैसे आपने कहा कि कभी लहरें उठती हैं, कभी तूफान आते हैं और इस समय हमारे सामने जो बैठे हुए हैं वे इसी तरह की लहरों में फंस गए हैं और तूफान से निकल नहीं पा रहे हैं। लेकिन हम चाहते हैं कि जो परिस्थिति पैदा हुई है, वे उन लहरों में से निकल आएं। लहरें उन्हें ज्यादा गहराई में ले जाएं, हम यह नहीं चाहते हैं।

अध्यक्ष महोदय, आपने आज साढ़े 11 बजे एक बैठक का आयोजन किया है। बेसिक पालिसी के बारे में टेलीफोन से संबंधित कागज देखे जा रहे हैं, फाइलें देखी जा रही हैं उनको भी व्यवस्थित करने की आवश्यकता है। कल जिस तरह की बैठक हुई उस बैठक में से रास्ता नहीं निकलेगा। मुझे ऐसा लगता है वह समाधान का तरीका नहीं है उसको भी व्यवस्थित रूप देना पड़ेगा। तथ्यों की तह तक जाने में किसी को आपत्ति नहीं होनी चाहिए और अगर आपत्ति है तो उस आपत्ति को स्वीकार नहीं किया जा सकता है।

महोदय, मेरा निवेदन है कि आज तो आप सदन को गरिमा के साथ स्थगित कर दीजिए।...**(व्यवधान)** आज हमें पूरे दिन का समय दीजिए, इस बीच में चर्चा हो सकती है। वह बैठक भी किसी तरह से आयोजित की जाए और उसमें से क्या निष्कर्ष निकाला जाए इस पर भी विचार हो सकता है। इस बारे में सदन की राय लें, यह मेरा अनुरोध है।...**(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : यह अवसर ऐसा है जब हमारे मन में आनन्द भी है और हमारे मन में यह विचार भी है कि किस प्रकार से इस प्रश्न को हल किया जाए। आप सब की ओर से और मेरी ओर से भी इस सदन में हम चन्द्र शेखर जी का हृदय से अभिनंदन करते हैं।

वाजपेयी जी ने जो कहा है उसको मैंने गौर से सुना है। इस सदन में बहुत ही गहराई से और ऊंचाई से विचार करने वाले हमारे जो ज्येष्ठ साथी हैं उनकी राय सदन की गरिमा बढ़ाने के अनुरूप ही होती है। मैं समझता हूं कि गवर्नमेंट की तरफ से भी उसी प्रकार का विचार होगा और सब की तरफ से भी होगा। मैं उनकी सूचना को मान्य करता हूं और सदन को मैं कल 11 बजे तक के लिए स्थगित करता हूं और जो पक्ष के नेता हैं उनको साढ़े 11 बजे अपने चेम्बर में आने के लिए आमंत्रित करता हूं, वहां आकर उसके संबंध में बातचीत करेंगे।

यह प्रथा एक बिल्कुल नयी है तो भी इस अड़चन में से रास्ता निकालने के लिए बहुत उपयुक्त है, यह मान कर मैं यह हाउस कल 11 बजे तक के लिए स्थगित करता हूं।

11.04 म.पू.

तत्पश्चात् लोक सभा बुधवार, 13 दिसम्बर, 1995/ 22 अग्रहायण, 1917 (शक) ग्यारह बजे तक के लिए स्थगित हुई।